

मार्गदर्शक संजीव कुमार, मंडल रेल प्रबंधक	मुख्य संपादक लोकेश विश्वादी, अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी	संपादक निकेश कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी	उप संपादक मनोज कुमार साहू वरिष्ठ अनुवादक
--	--	---	--

करें योग, रहें निरोग

भारतीय दर्शन में योग विद्या का महत्वपूर्ण स्थान है। यह विद्या सभी विद्याओं में सर्वोपरि है। योग विद्या से संबंधित ज्ञान वेद, पुराण, उपनिषद, श्रीमद्भगवद्गीता आदि जैसे भारतीय ग्रंथों में अनेक स्थानों पर देखने को मिलता है।

योग शब्द संस्कृत के 'युज' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है जोड़ना अर्थात् किसी भी वस्तु से अपने को जोड़ना या किसी कार्य में स्वयं को लगाना। महर्षि पतंजलि योगसूत्र के प्रणेता माने जाते हैं। उन्होंने योग को परिभाषित करते हुए लिखा है कि – 'योगचित्तवृत्तिनिरोधः'। अर्थात् चित्त की वृत्तियों का सर्वथा अभाव ही योग है। चित्त का अर्थ यहां अंतःकरण से है। इस प्रकार अंतःकरण को विषयों के प्रति आसक्त होने से रोकना ही योग है। इस कारण वैदिक काल से ही आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग की आवश्यकता व महत्व को प्रायः सभी दर्शनों एवं भारतीय धार्मिक सम्प्रदायों ने एकमत व मुक्तकंठ से स्वीकार किया है। आज के युग में तो मनुष्य की व्यस्तता और मन की व्यग्रता के कारण योग का महत्व और भी बढ़ गया है। आधुनिक मनुष्य को आज योग की ज्यादा आवश्यकता है क्योंकि मन और शरीर अत्यधिक तनाव, विभिन्न प्रदूषण तथा भागमभाग जीवन के कारण लगातार रोगग्रस्त होता जा रहा है। योग प्रत्येक व्यक्ति की



जीवन शैली बने, इसी उद्देश्य से हमारे देश की पहल पर प्रतिवर्ष 21 जून को अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। तदनुसार इस वर्ष भी 'वसुधैव कुटुंबकम्' की थीम पर पूरे देश में उक्त दिवस का आयोजन काफी बड़-चड़कर किया गया। इस क्रम में रायपुर रेल मंडल के विभिन्न स्थानों पर भी रेल अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों के लिए योग शिविर लगाए गए ताकि सभी योग करें और

निरोग रहें।

मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार की उपस्थिति में बी. एम. वाय., भिलाई-चरौदा में योग शिविर का आयोजन किया गया जिसमें द.पू.म.रे. मजदूर कांग्रेस यूनियन के मंडल समन्वयक श्री डी. विजय कुमार सहित यूनियन के सदस्य एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे।

इसी प्रकार रेलवे सामुदायिक भवन, डब्ल्यू.आर.एस. कॉलोनी, रायपुर में भी योग कार्यक्रम आयोजित किये गये। इस कार्यक्रम में अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) श्री लोकेश विश्वाई, अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रस्ट्रक्चर) श्री आशीष मिश्रा, उपाध्यक्षा सेक्रेट्री श्रीमती शिखा विश्वाई सहित सेक्रेट्री के पदाधिकारी, मंडल के अधिकारी एवं कर्मचारीगण तथा भारत स्काउट व गाइड के सदस्य सम्मिलित हुए। आर्ट ऑफ लिविंग की प्रशिक्षिका श्रीमती पूजा गोयल, श्री अमर लालवानी द्वारा योग प्रशिक्षण दिया गया तथा उनके सहयोगी के रूप में हितेश लालवानी और हर्ष अग्रवाल भी उपस्थित थे। इस अवसर पर लगभग 115 रेलवे अधिकारियों / कर्मचारियों तथा उनके परिवारजनों ने योग व ध्यान किया तथा इसके लाभ से परिचित हुए।



कार्यक्रम के दौरान अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री लोकेश विश्वाई द्वारा योग को जीवन के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए मंच पर योग प्रशिक्षक के साथ स्वयं कुशलता से योग करके हम सभी का उत्साहवर्धन किया गया। रायपुर मंडल के अन्य यूनिटों, स्टेशनों पर भी रेल कर्मियों को योग क्रियाओं का अभ्यास कराया गया और यह संदेश दिया गया कि हम सभी को नियमित रूप से योग करना चाहिए क्योंकि जब हम योग करेंगे तभी रहेंगे निरोग।



आठवीं अनुसूची के अंतर्गत आने वाली भाषाएं हैं -

- | | | | | |
|------------|------------|-------------|------------|------------|
| 1. असमिया | 2. उड़िया | 3. उर्दू | 4. कन्नड | 5. कश्मीरी |
| 6. गुजराती | 7. तमिल | 8. तेलुगु | 9. पंजाबी | 10. बंगला |
| 11. मराठी | 12. मलयालम | 13. संस्कृत | 14. सिन्धी | 15. हिंदी |
| 16. नेपाली | 17. कोंकणी | 18. मणिपुरी | 19. मैथिली | 20. डोगरी |
| 21. संथाली | 22. बोडो | | | |

राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन पर विचार-विमर्श

हिंदी भारत संघ की राजभाषा है अर्थात केंद्र सरकार के प्रशासनिक काम-काज के लिए भारत के संविधान के तहत अंगीकार की हुई भाषा है। अतः रेल प्रशासन का समस्त काम-काज, विशेषकर आम जनता से जुड़े सभी कार्य हिंदी में हो, यह हमारा संवैधानिक और नैतिक दायित्व है। हाल में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा रेल कार्यालय का निरीक्षण किया गया है और उनके द्वारा भी हिंदी के क्रियान्वयन हेतु कई महत्वपूर्ण निदेश दिए गए हैं। इस कारण रायपुर रेल मंडल राजभाषा हिंदी के नीति-नियमों एवं संवैधानिक प्रावधानों के क्रियान्वयन के प्रति काफी गंभीर एवं सतत प्रयत्नशील है। इसी उद्देश्य से मंडल पर प्रति तिमाही मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में अध्यक्षता में आयोजित की जाती है और बैठक के दौरान मंडल रेल प्रबंधक महोदय द्वारा दिए गए निदेशों का अनुपालन पूरी निष्ठा के साथ किया जाता है।



इसी क्रम में दिनांक 19.06.2023 को मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार की अध्यक्षता में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर की 61वीं बैठक आयोजित की गई, जिसमें रेलवे बोर्ड द्वारा जारी मानक कार्यसूची के अनुसार जनवरी-मार्च 2023 तिमाही के दौरान मंडल में हुई राजभाषा प्रगति की समीक्षा की गई।

सर्वप्रथम अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) श्री लोकेश विश्‍नोई ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि प्रति तिमाही मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित किए जाने का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि हमारा मंडल, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में कितना सफल हुआ है तथा हमें हिंदी के प्रयोग-प्रसार के लिए और क्या-क्या करने हैं। चूंकि हमारा मंडल 'क' क्षेत्र में स्थित है, अतः हमारी जिम्मेदारी और भी अधिक बढ़ जाती है और इसलिए हमें राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के प्रति अधिक सजग एवं प्रयत्नशील रहना है।

मंडल रेल प्रबंधक श्री संजीव कुमार ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि वर्तमान में हमारे मंडल में राजभाषा हिंदी संबंधी कार्यों के क्रियान्वयन में संतोषजनक वृद्धि हुई है तथापि हमें राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए। आप सभी वार्षिक कार्यक्रम के सभी मदों जैसे हिंदी नोटिंग, हिंदी डिक्‍टेशन एवं पत्राचार में लक्ष्यानुसार कार्य किया जाना सुनिश्चित करें। धारा 3(3) का अनुपालन लगातार करते रहना अति आवश्यक है क्योंकि यह एक बहुत ही संवेदनशील मामला है, अतः इस पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाए। सभी विभागों एवं यूनिटों में हिंदी में किए जा रहे कार्यों के नमूने रखे जाएं। स्टेशन परिसर एवं कार्यालय क्षेत्र में सभी प्रकार के बोर्ड को अनिवार्य रूप से द्विभाषी में अर्थात हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों में प्रदर्शित किए जाएं।

इस बैठक में श्री आशीष मिश्रा, अपर मंडल रेल प्रबंधक (इन्फ्रा.) सहित मंडल के विभिन्न शाखा अधिकारी एवं उनके प्रतिनिधि उपस्थित थे। बैठक का संचालन राजभाषा अधिकारी, श्री निकेश कुमार पाण्डेय द्वारा किया गया।

जान है तो जहान है

भारतीय रेल में संरक्षा के बदलते स्वरूप

इस वर्ष 02 जून 2023 को ओडिसा के बाहानागा बाजार रेलवे स्टेशन, खड़गपुर खंड, खड़गपुर मंडल, दक्षिण पूर्व रेलवे पर हुए रेल हादसे के बाद एक बार फिर संरक्षित रेल परिचालन एक चर्चा का गहन विषय बना हुआ है। 290 से अधिक यात्रियों के देहावसान हो जाने की घटना ने से जन-जन व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सभी रेलवे सिस्टमों को चिंता में डाल दिया है। यह चिंता और भी लाजिमी इसलिए हो जाती है कि आज नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल रेल परिचालन के लिए हो रहा है। इस प्रकार की दुर्घटनाओं के सही कारणों का पता लगाना और तदनुसार ठोस कार्रवाई करना की अत्यंत आवश्यक है।

भारतीय रेल के 19 जोन के 70 डिवीजनों को उनकी कार्यप्रणाली के आधार पर वर्गीकरण करना होगा, जैसे

Sub-urban Division - जैसे मुंबई सेंट्रल, मुंबई डिवीजन, चेन्नई, हावड़ा डिवीजन एवं सियालदह डिवीजन।

High Density Passenger division - जैसे बनारस, लखनऊ जंक्शन उत्तर पूर्व रेलवे, राजकोट, भावनगर, अहमदाबाद (पश्चिम रेलवे), सिकंदराबाद, विजयवाड़ा (दक्षिण मध्य रेलवे) एवं बंगलोर, मैसूर, (दक्षिण पश्चिम रेलवे) तथा दानापुर (पूर्व मध्य रेलवे) इत्यादि।

High Density Goods division - बिलासपुर, रायपुर, खोरदा रोड, वालतेर, धनबाद, चकधरपुर एवं सिकंदराबाद मंडल।

High Density Goods & Coaching division जैसे प्रयागराज, झांसी, आगरा, कोटा, रतलाम, जबलपुर एवं दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन।

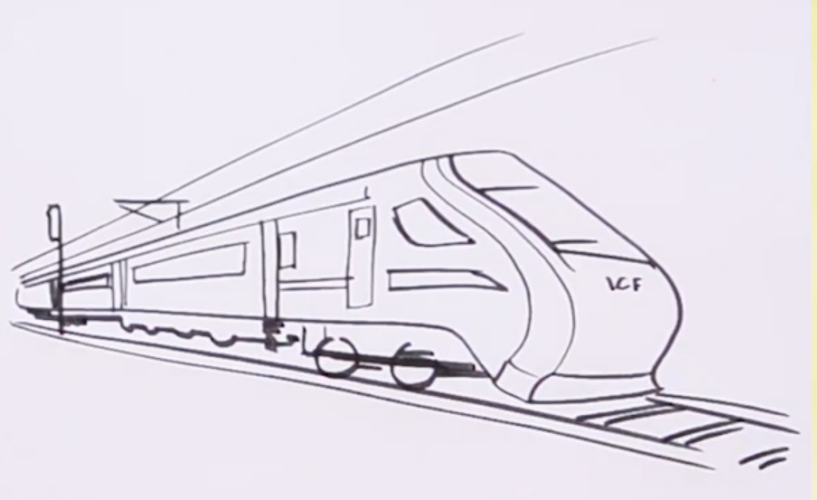
सभी डिवीजनों में सिगनल प्रणाली को इलेक्ट्रिकल सेंट्रल पैनल इंटरलॉकिंग से अपग्रेड करके सॉलिड स्टेट इंटरलॉकिंग पैनल में की जा रही है, इससे स्टेशन मास्टर द्वारा दोनों एवं दो से अधिक लाइनों में रेल परिचालन करते समय सॉलिड स्टेट पैनल इंटरलॉकिंग में परिचालन के लिए गाड़ी का रूट सेट लॉक डिटेक्ट करके सिगनल लोअर करने का कार्य वीडियू पैनल पर माउस का प्रयोग करके किया जा रहा है तथा केबिनो, समपारों से प्राइवेट नंबर के आदान-प्रदान व स्लॉट रिलीज करने के कार्य की बचत हो रही है। इस प्रकार पुराने सिस्टम में हर स्टेशन के दोनों ओर 02 या 03 केबिन और बड़े स्टेशनों व यार्डों में 4 से 5 केबिन बंद कर दिए हैं। भारतीय रेल के बढ़ते लदान के कारण भारतीय रेलवे द्वारा 2022-23 में रिकॉर्ड 4542 मिलियन टन लदान किया गया और इस प्रकार 2.40 लाख करोड़ की धनराशि अर्जित की गई। मालगाड़ियों की संख्या में बढ़ोत्तरी लगातार जारी है।

इसके अतिरिक्त हर स्टेशन के क्षेत्राधिकार में 1 या 2 या अधिक समपार भी धीरे-धीरे कम होते जा रहे हैं और उनकी जगह आरओबी या आरयूबी की व्यवस्था की जा रही है। इस प्रकार एक स्टेशन पर एक दिशा में गुजरने वाली गाड़ियों को जहां पहले 10 आंखों से संरक्षा की दृष्टि से देखा जाता रहा है, अब केवल 4 आंखों से (स्टेशन मास्टर और प्वाइंट्समैन) देखा जाता है, अगर परिस्थितियां अनुकूल हो और सामान्यतः एक स्टेशन पर जो अप और डाउन में लूप लाइन हो जाती है, वो खाली हों।

इस प्रकार जैसे हमने सिगनल प्रणाली को अपग्रेड किया है, उसी प्रकार हमें गुजरने वाली गाड़ियों के संरक्षित परिचालन का अवलोकन करने के लिए विश्वसनीय हॉट बॉक्स डिटेक्टर तथा फ्लैट टायर पकड़ने वाले उपकरण लगाने की जरूरत है, जो कम से कम रेलवे बोर्ड के मानकों के अनुसार हर 40 किलोमीटर की दूरी पर उपलब्ध हों और वे दोनों दिशाओं में गुजरने वाली गाड़ियों में उक्त को तकनीकी रूप से सेन्स कर सके।

इसी प्रकार हमें रनिंग स्टाफ की कार्यप्रणाली को भी रिव्यू करना है। सभी बड़े स्टेशनों जैसे पुरानी दिल्ली, नई दिल्ली, आनंदविहार, मुंबई सेन्ट्रल, सीएसटीएम टर्मिनल, बंगलुरु, चेन्नई, कोलकाता, गोरखपुर, भुवनेश्वर, सिकंदराबाद इत्यादि पर सभी महत्वपूर्ण गाड़ी सुबह पहुंचती हैं और शाम को चलकर दूरी की दृष्टि से अपने गंतव्य को पहुंचती हैं।

इस प्रकार पायलट, सहायक पायलट एवं गार्ड दोनों ट्रिप्स में रात्रि झूटी ही करते हैं और उनके लिंक में नाईट इन बेड की व्यवस्था की तो जाती है, लेकिन गाड़ियों के बढ़ने के कारण अमल नहीं हो पाता है, वैसे भी दिन के समय की नींद का रात की नींद से कोई मुकाबला नहीं किया जा सकता। इस विषय पर गंभीरता से विचार कराकर ठोस उपाय कर सुगम लिंक बनाकर संरक्षित रेल परिचालन की व्यवस्था किए जाने की आवश्यकता है।



भारतीय रेल में लाईन स्टाफ, जिसमें ट्रैकमैन, ओएचई स्टाफ, रेल पथ निरीक्षक, ट्रैक मशीन स्टाफ, ट्रैकमैन, स्टेशन मास्टर, प्वाइंट्समैन, शंटिंग मास्टर शामिल हैं, के प्रशिक्षण के पुनर्निरीक्षण की जरूरत है। ट्रेनिंग स्कूलों में सॉलिड स्टेट इंटरलॉकिंग के पैनल लगाकर परिचालन व सिगनल कर्मचारियों एवं अधिकारियों का प्रशिक्षण सुनिश्चित किया जाना चाहिए। जैसे रेल पथ निरीक्षक, ओएचई स्टाफ ब्लॉक लेकर काम करते हैं, उसी प्रकार सिगनल मेन्टेनर निरीक्षक भी ब्लॉक लेकर काम करें और किसी भी प्रकार के शॉर्टकट प्रणाली को न अपनायें।

भारतीय रेल में गेज परिवर्तन का कार्य जैसे ही पूरा हो जाता है, वैसे ही हमें अपने नियमों में बदलाव कर उन्हें चुस्त दुरुस्त बनाए जाने की जरूरत है। आज भी बहुत से नियम ऐसे हैं, जिनका ठीक से प्रयोग नहीं होता, उन्हें रिव्यू किए जाएं और नई परिस्थितियों के अनुसार नए नियमों को शामिल कर रूलबुक को धर्मग्रन्थ की तरह अपनाएं जाएं इससे कर्मचारियों का मनोबल भी बढ़ेगा और रेलवे के सभी फिक्सड एसेट्स की मरम्मत का कार्य भी अच्छे ढंग से हो जाएगा। इस प्रकार संरक्षित परिचालन के वातावरण में आमूल-मूल परिवर्तन होगा और इससे जनता का विश्वास भी बढ़ेगा।

संरक्षित रेल परिचालन हर नागरिक की जिम्मेवारी है। हमें रेलकर्मियों की कार्य प्रणाली में बाधा नहीं डालनी चाहिए। समपार बंद होने की स्थिति में हमें समपार के खुलने का इंतजार करना चाहिए तथा गेटमैन पर दबाव नहीं बनाना चाहिए। रेल पटरी को स्लीपर से बांधने वाले पेन्ड्रोल क्लिप से छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए। किसी कारण से यदि कोई भी रेल लाइन बाधित (पेड़ गिरने, रेल पटरी टूटने, ओएचई टूटने या अन्य कारणों से) होती है तो हमें नजदीकी स्टेशन मास्टर या रेल कर्मचारियों को इससे अवगत कराकर उस रेल लाइन की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। हम सभी मिलकर भारतीय रेल को संरक्षित बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

(शैलेन्द्र कपिल)

सेवानिवृत्त प्रमुख मुख्य वाणिज्य प्रबंधक

उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज

एक राजा था जिसने अपने राज्य में क्रूरता से बहुत सी दौलत इकट्ठा करके (एक तरह शाही खजाना) आबादी से बाहर जंगल में एक सुनसान जगह पर बनाए तहखाने में सारे खजाने को खुफिया तौर पर छुपा दिया था। खजाने की सिर्फ दो चाबियां थीं - एक चाबी राजा के पास और दूसरी उसके एक खास मंत्री के पास थी। इन दोनों के अलावा किसी को भी उस खुफिया खजाने का राज मालूम न था। एक रोज किसी को बताए बगैर राजा अकेले अपने खजाने को देखने निकला, तहखाने का दरवाजा खोल कर अंदर दाखिल हुआ एवं अपने खजाने को देख-देख कर खुश हो रहा था और खजाने की चमक से सुकून पा रहा था।

उसी वक्त मंत्री भी उस इलाके से निकला और उसने देखा की खजाने का दरवाजा खुला है तो वह हैरान हो गया और खयाल किया कि कहीं कल रात जब मैं खजाना देखने आया था तब शायद खजाना का दरवाजा खुला रह गया होगा। उसने जल्दी-जल्दी खजाने का दरवाजा बाहर से बंद कर दिया और वहां से चला गया, उधर खजाने को निहारने के बाद राजा जब संतुष्ट हुआ और दरवाजे के पास आया तो ये क्या...दरवाजा तो बाहर से बंद हो गया था, उसने जोर-जोर से दरवाजा पीटना शुरू किया पर वहां उनकी आवाज सुनने वाला उस जंगल में कोई न था।

राजा चिल्लाता रहा, पर अफसोस कोई नहीं आया तो थक हार कर के खजाने को देखता रहा। अब राजा भूख और पानी की प्यास से बेहाल हो रहा था, पागलों सा हो गया..वह रेंगता-रेंगता हीरों के संदूक के पास गया और बोला ऐ दुनिया के नायाब हीरों, मुझे एक गिलास पानी दे दो.., फिर मोती, सोने और चांदी के पास गया और बोला ऐ मोती, चांदी, सोने के खजाने मुझे एक वक्त का खाना दे दो..। राजा को ऐसा लगा कि हीरे-मोती उसे बोल रहे हों कि तुम्हारी सारी ज़िन्दगी की कमाई तुम्हें एक गिलास पानी और एक समय का खाना नहीं दे सकती..राजा भूख से बेहोश होकर गिर गया।



जब राजा होश में आए तो उसने सारे हीरे-मोती को बिखेर कर दीवार के पास अपना बिस्तर बनाया और वह उस पर लेट गया। वह दुनिया को एक पैगाम देना चाहते थे लेकिन उसके पास कागज़ और कलम नहीं थे।

राजा ने पत्थर से अपनी उंगली फोड़ी और बहते हुए खून से दीवार पर कुछ लिख दिया, उधर मंत्री और पूरी सेना लापता राजा को ढूँढते रहे पर बहुत दिनों तक राजा न मिला तो मंत्री, राजा के खजाने को देखने आया, उसने देखा कि राजा हीरे जवाहरात के बिस्तर पर मरा पड़ा है और उसकी लाश को कीड़े मोकड़े खा रहे हैं, राजा ने दीवार पर खून से लिख दिया था...ये सारी दौलत एक घूंट पानी और एक निवाला नहीं दे सकी...।

* यही अंतिम सच है। आखिरी समय आपके साथ आपके कर्मों की दौलत जाएगी, चाहे आप कितनी बेईमानी से हीरे, पैसा, सोना, चांदी इकट्ठा कर लें, सब यहीं रह जाएगा। इसीलिए जो जीवन आपको प्रभु ने उपहार स्वरूप दिया है उसमें बिना किसी स्वार्थ के अच्छे कर्म एवं लोगों की भलाई के काम कीजिए और अर्जित कीजिए अच्छे कर्मों की अनमोल दौलत, जो आपके सदैव काम आएगी।*

संकलनकर्ता - लोकेश विश्नोई

अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन)

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर

आत्मनिर्भर भारत

(मंडल स्तर पर आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कृत निबंध)

छुटी हुई डोर को फिर से संभाला जाए,
उठो, आओ बंधु कदम से कदम मिलाया जाए।
शंखनाद करें विशाल लक्ष्य को पाने का,
मेरे भारत को अब से आत्मनिर्भर बुलाया जाए ।

प्रस्तावना :- स्वामी विवेकानंद जी ने मिशिगन विश्व-विद्यालय में अपने व्याख्यान में कहा था कि " अभी वर्तमान सदी भले ही आपकी हो, किन्तु 21वीं सदी अवश्य भारत की होगी ।

21वीं सदी के भारत की कल्पना आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा के बिना अधूरा प्रतीत होता है । किसी भी चीज़ के लिए किसी अन्य पर निर्भर होना एक बंधन सा प्रतीत होता है । भारत स्वतंत्र अवश्य हो गया है किन्तु विदेशियों द्वारा भारत के संसाधनों के निर्मम दोहन से उसकी निधि में कुछ कमी तो अवश्य आई, फिर भी भारत विश्व के लिए एक प्रमुख बाजार का केंद्र बना रहा । आत्मनिर्भरता अर्थात् स्वयं की आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करना । इस पर अनेकानेक प्रयास पहले भी किये गए हैं, जिनसे आत्मनिर्भर भारत बनने की दिशा तय हुई और आज भी आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को पूर्ण रूप से प्राप्त करने के लिए नित्य नये अभियान व मिशन पर काम किए जा रहे हैं । हाल ही में आदरणीय प्रधानमंत्री जी द्वारा "आत्मनिर्भर भारत अभियान " की संकल्पना का आह्वान किया गया । यह ' आत्मनिर्भर भारत अभियान ' , भारत की आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने की प्रक्रिया में उत्प्रेरक का कार्य करने लगा है । संसाधनों की कमी ने हमें अवश्य घेर रखा है किन्तु स्वयं की चीज़ों से वस्तुओं का निर्माण करना एवं उसका उपयोग करना तथा राष्ट्र निर्माण में मदद करना, यह क्षमता हममें अभी भी अंतर्निहित है । यह क्षमता हमने खोई नहीं है । आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य भले ही विशाल हो, भले ही हम लड़खड़ा जाएं लेकिन हारेंगे नहीं ।



आत्मनिर्भर भारत का प्रारंभ :

आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना भारत के वैचारिक परम्परा का हिस्सा रहा है । इतिहास के पन्नों को पलटा जाये तो हम पायेंगे कि आत्मनिर्भर भारत के लिए कई प्रयास किये जा चुके हैं और इनमें से हम कई क्षेत्रों में सफल भी हुए हैं । हमारे महापुरुषों के वाक्य हमारे लिए वेदों की वाणी की तरह है । हमारे महापुरुषों ने भारत की क्षमता को बहुत ही गहराई से पहचाना है । आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य में स्वदेशी को अपनाना, वह इसकी आत्मा के समरूप है । आत्मनिर्भर भारत का विचार, हमारे इन महापुरुषों में से एक बालगंगाधर तिलक के स्वराज की अवधारणा में देखने को मिलता है । उन्होंने हिन्दू केसरी में लिखा था " भारत एक ऐसा वृक्ष है जिसकी दो शाखाएं स्वदेशी व बहिष्कार है। " संसाधनों के परिप्रेक्ष्य में तिलक जी ने कहा कि "साधनों की अधिकता की अपेक्षा उनकी प्रभावशीलता प्रमुख है " यह वाक्य वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हमसब में जोश और उत्साह भरने वाला है । सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान पूजनीय महात्मा गांधी जी ने स्वदेशी व बहिष्कार का मूल मंत्र दिया । परिणामस्वरूप विदेशी वस्तुओं की होली जलाई गई जिससे अंग्रेजी शासन जड़-मूल से हिल गया । इस समय ही खादी विकल्प के रूप में आया जो वर्तमान समय में भी प्रचलित है ।

उद्योगों की आत्मनिर्भरता :

इसी प्रकार उद्योगों की ओर नजर घुमाया जाए तो हम पाएंगे कि 1854 में कपड़ा मिल बंबई, 1907 में टाटा स्टील, 1904 में चैन्नई सीमेंट कारखाना व सेल जैसे कई उपक्रमों की स्थापना की गई जिससे भारत को आत्मनिर्भरता की राह में गतिमान होने में तेजी आई तथा विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में भारत का नाम भी दर्ज हो गया ।

कृषि के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता :

कृषि के क्षेत्र में भी भारत ने कई ऐसे अभूतपूर्व कार्य किये जिसने भारत के आत्मनिर्भर बनने की राह को सुगम किया है । हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, नील क्रांति जैसी कई सफलताएं भारत के नाम दर्ज हैं । कई डेयरी फार्म खुले । अमूल दूध, आनंद गुजरात की स्थापना की गई। इन सभी प्रत्यक्ष प्रमाणों से विश्व ने भारत का लोहा माना । भारत ने अपने घरेलू मांग की पूर्ति के साथ-साथ निर्यात कर विश्व के देशों को यह संकेत दिया कि आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य दूर नहीं है ।

परमाणु एवं अंतरिक्ष के क्षेत्र में :

परमाणु व अंतरिक्ष और रक्षा के क्षेत्र में भी भारत ने कई सफलताएं दर्ज की हैं जिनसे भी भारत को आत्मनिर्भरता की ओर आगे बढ़ने के लिए एक नई प्रेरणा मिली है । वह चाहे परमाणु परीक्षण ही क्यों न हो, जिसकी ध्वनि से समूचा विश्व गुंज उठा था अथवा चंद्रयान मिशन या मंगलयान, जिसकी सफलता ने भारत को अंतरिक्ष के क्षेत्र में शीर्ष देशों की सूची में ला खड़ा किया था । विश्व के अन्य देश जहां बड़ी लागत में थोड़े परिणाम प्राप्त कर पाते थे वहीं भारत ने सबसे पहले एवं प्रथम प्रयास में ही मंगलयान को सफलता के साथ प्रेक्षित कर कम लागत में अधिक परिणाम प्राप्त करने में सफल रहे । यह भारत की दक्षता का द्योतक है ।

अन्य क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता :

सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्योग जिस प्रकार तीव्र गति से कार्य कर रहे हैं एवं परिणाम दे रहे हैं वह भारत की आत्मनिर्भरता की गति को त्वरित कर रहे हैं । मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया इन सबकी सफलता का ही परिणाम है कि भारत पहले जिन वस्तुओं का आयात करता था अब वह उन्हीं वस्तुओं को अपने ही देश में सृजित कर रहा है, वह भी गुणवत्ता में समझौता किए बिना । इस प्रकार आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा प्रारंभ से ही भारतीयों के अंतर्गमन में निहित थी किन्तु संसाधनों की कमी के कारण लक्ष्य को हम प्राप्त नहीं कर पा रहे थे । वह अब नियोजन की गुणवत्ता से धीरे-धीरे प्राप्त होता मालूम पड़ रहा है ।

आत्मनिर्भर भारत अभियान परिचय :

वैश्विक महामारी कोरोना के कारण सभी ओर अंधकार छा गया था तथा भविष्य का मार्ग दृष्टिगोचर नहीं हो पा रहा था । ऐसे समय में आदरणीय प्रधानमंत्री जी द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान की ज्योति से भारत के भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया गया । जिस समय सारा विश्व इस महामारी से जूझ रहा था, अनेक देशों में वस्तु तथा सेवा की आवाजाही सम्पूर्ण रूप से बहाल नहीं की जा सकी थी, विश्व इस महामारी के उपचार के लिए संघर्ष कर रहा था तथा निराशा के बादलों ने विश्व के सभी देशों को घेर लिया था उस समय सभी देश आशा भरी नजरों से भारत की ओर ही देख रहे थे । भारत के वैज्ञानिकों व डॉक्टरों ने टीका का निर्यात कर विश्व में अपनी क्षमता व दक्षता की छाप छोड़ी । साथ ही विभिन्न देशों को निःशुल्क टीका प्रदान कर विश्व को मानवता का परिचय दिया तथा “ वसुधैव कुटुम्बकम् ” का संदेश भी दिया । इन क्षणों में इस महामारी को अवसर के रूप में देखते हुए आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत “ वोकल फॉर लोकल ” की ओर सभी का ध्यान आकर्षित किया । इस कठिन समय ने हमें लोकल की महत्ता को समझाया और सुखद संदेश देशवासियों को दिया ।

रणनीति :

विशेष आर्थिक पैकेज के रूप में 20 लाख करोड़, जो कि भारत की जी.डी.पी. का लगभग 10% है, की घोषणा की गई। श्रम, भूमि, तरल / नकदी तथा कानून इन चार क्षेत्रों में आमूलचूल समीक्षा करने के इरादे को दर्शाया गया। यह अभियान 5 आधारभूत स्तंभों पर खड़ा है जो निम्न हैं :-

1. अर्थव्यवस्था :- अर्थव्यवस्था के स्थान पर पर बड़ी छलांग का लक्ष्य स्थापित किया गया।
2. अवसंरचना :- भारत के आधुनिक अवसंरचना को प्रोत्साहन देना।
3. प्रौद्योगिकी :- प्रौद्योगिकी क्षेत्र में प्रणाली को सुदृढ़ करना।
4. गतिशील जनसांख्यिकी :- यह आत्मनिर्भर भारत के लिए ऊर्जा स्रोत का कार्य करेगा।
5. मांग :- मांग आपूर्ति श्रृंखला का अधिकतम उपयोग किया जाना।

साथ ही साथ सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए क्रेडिट गारंटी योजना बनाई जिससे इसकी मांग बढ़े एवं निवेश की प्राप्ति हो। निजी क्षेत्रों की भूमिका को बढ़ावा दिये जाने की घोषणा की गई। कोयला, खनिज, उड्डयन और परमाणु क्षेत्र में संरचनात्मक सुधार के प्रयास किए गए। किसानों को उचित मूल्य के लिए आवश्यक वस्तु अधिनियम में बदलाव की बात की गई।

चुनौतियां :-

1. कम लागत व उच्च गुणवत्ता के उत्पादों का उत्पादन करना - यह एक चुनौतीपूर्ण पक्ष है।
2. बुनियादी ढांचे की कमी से निवेशों का न आना।
3. वित्तपोषण का भरण करना - यह भारत के लिए बड़ी चुनौती है, क्योंकि बड़े आर्थिक पैकेज का वहन करना राजकोषीय निधि पर भार बढ़ाता है।

सुझाव :-

1. बुनियादी कमियों को देखें व उसका विकल्प खोजें।
2. उदारवादी की नकारात्मक पक्ष को देखते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योगों को फैलाना। हस्तशिल्प व अन्य कलाओं को विश्व से परिचित कराना।
3. निजी क्षेत्रों की भूमिका में बढ़ोत्तरी करना।

निष्कर्ष :-

आत्मनिर्भर भारत की नींव हमारे महापुरुषों द्वारा दी गई है। यह हमारा दायित्व है कि हम इस पर इमारत कितनी ऊंचाई तक तथा कितना भव्य बना सकते हैं। आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य विशाल व कठिन अवश्य है, किन्तु असंभव नहीं। आज नहीं तो कल यह लक्ष्य पूर्ण होगा और उस इमारत में भारत मां का ध्वज लहरायेगा। आत्मनिर्भर भारत बनने की चढ़ाई कितनी भी तीक्ष्ण क्यों न हो, हमारे महापुरुषों का स्वप्न अवश्य पूरा होगा। वह दिन दूर नहीं जब भारत की कीर्ति का यशगान सारा विश्व करेगा और विश्व में विकास की ग्राफ की हर रेखा भारत मां के चरणों को छूकर गुजरेंगी।

- श्री जी. ईश्वर राव

वरि. सहायक लोको पायलट

मुख्य चालकदल नियंत्रक कार्यालय, भिलाई

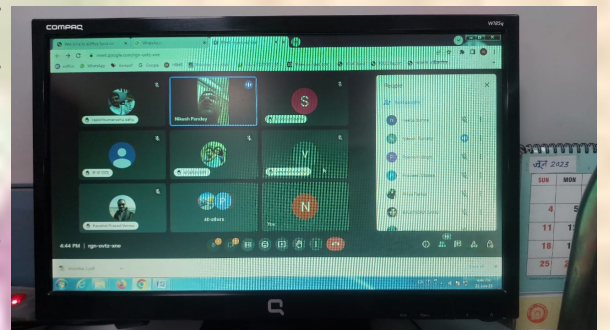
अखिल रेल हिंदी प्रतियोगिताओं में रायपुर मंडल के 02 कर्मचारी पुरस्कृत

रेलवे बोर्ड द्वारा दिनांक 21.06.2023 से 23.06.2023 तक भारतीय रेल यांत्रिक एवं विद्युत इंजीनियरिंग संस्थान (IRIMEE), जमालपुर में आयोजित अखिल रेल हिंदी निबंध प्रतियोगिता में रायपुर मंडल से श्री जी. ईश्वर राव, वरि. सहायक लोको पायलट, मुख्य चालकदल नियंत्रक, भिलाई एवं हिंदी वाक् प्रतियोगिता में श्री भोला चौधरी, प्रयोगशाला सहायक - I, वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर, डीजल लोको शेड, रायपुर ने दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे का प्रतिनिधित्व करते हुए प्रेरणा पुरस्कार प्राप्त किए



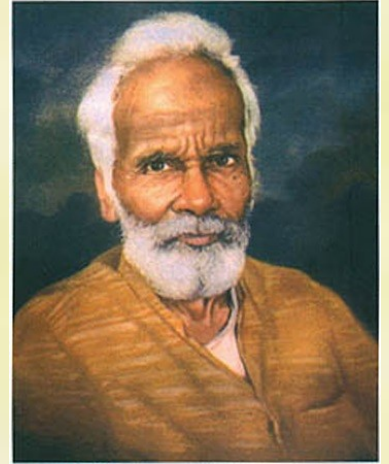
हिंदी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 21.06.2023 को राजभाषा विभाग, रायपुर द्वारा “ राजभाषा नीति, नियम एवं संवैधानिक प्रावधान ” विषय पर गूगल मीट के माध्यम से एक ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुल 47 कर्मचारियों ने भाग लिया । श्री निकेश कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी द्वारा उक्त विषय पर सारगर्भित एवं उपयोगी जानकारी प्रदान की गई ।



माह के साहित्यकार - वैद्यनाथ मिश्र (नागार्जुन)

जन्म	:	30 जून 1911
निधन	:	05 नवंबर 1911
जन्म स्थान	:	सतलखा, मधुबनी (बिहार)
उपनाम	:	नागार्जुन
प्रमुख कृतियाँ	:	युगधारा, प्यासी पथराई आँखें, सतरंगे पंखों वाली, हजार-हजार बाहों वाली, पुरानी जूतियों का कोरस, तुमने कहा था, मैं मिलटरी का बूढ़ा घोड़ा, रत्नगर्भा, भस्मांकुर बलचनमा, रतिनाथ की चाची, कुंभी पाक, उग्रतारा, वरुण के बेटे आदि
विविध	:	साहित्य अकादमी पुरस्कार -1969, भारत भारती सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, राहुल सांकृत्यायन सम्मान।



मेरी भी आभा है इसमें

नए गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है
यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है
मेरी भी आभा है इसमें
भीनी-भीनी खुशबूवाले
रंग-बिरंगे
यह जो इतने फूल खिले हैं
कल इनको मेरे प्राणों ने नहलाया था
कल इनको मेरे सपनों ने सहलाया था
पकी सुनहली फसलों से जो
अबकी यह खलिहाल भर गया
मेरी रग-रग के शोणित की बूंदें इसमें मुसकाती हैं
नए गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है
यह विशाल भूखंड आज जो चमक रहा है

फसल

एक की नहीं, दो की नहीं,
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू :
एक के नहीं, दो के नहीं,
लाख-लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा :
एक की नहीं, दो की नहीं,
हज़ार-हज़ार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म :

फसल क्या है?
और तो कुछ नहीं है वह
नदियों के पानी का जादू है वह
हाथों के स्पर्श की महिमा है
भूरी-काली-संदली मिट्टी का गुण धर्म है
रूपांतर है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का !

पाठकों की प्रतिक्रियाएं सादर आमंत्रित हैं। कृपया अपने सुझाव व्हाट्सएप्प नंबर 9752877615 अथवा ई-मेल rbarsecr2006@gmail.com पर प्रेषित करें ताकि हम इसे और बेहतर बना सकें। यह ई-पत्रिका द.पू.म.रेलवे की वेबसाइट पर भी उपलब्ध है।

मंडल की गतिविधियां संबंधी विवरण एवं फोटोग्राफ्स जनसंपर्क अनुभाग, रायपुर से साभार।